नं०
११४

श्रीश्रीविष्णुप्रिया-सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीहरिदास गोस्वामी प्रभुपाद

गृथित

वसंत पञ्चमी

गौराब्द - ४१०

बङ्गाब्द-१३१

शकाब्द - १८८२

विक्रमाब्द-२०१७

॥ श्रीविष्णुप्रियावल्लभाय नमः ।

श्रीश्रीविष्णुप्रिया-
सहस्रनामस्तोत्रम्

जय शचीनन्दन जय गौरहरि।
विष्णुप्रियार प्राणधन नदीयाविहारि॥

रचयिता
श्रीहरिदास गोस्वामी प्रभुपाद

प्रथमावृत्ति – १०००

प्रकाशक
आर्यावर्त प्रकाशन गृह,
१०, चौरङ्गी रोड,
कलकत्ता–१३

चैतन्य-वल्लभा तुमि जगत ईश्वरी ।
तोमार दासेर दास हैते वाञ्छा करि ॥

श्रीराधा

प्रकाशकीय निवेदन

नवद्वीपनिवासी गोलोकस्थ श्रीहरिदासगोस्वामिप्रणीत श्रीधाम नवद्वीप श्रीश्रीगौराङ्ग-विष्णुप्रिया श्रीमन्दिरद्वारा प्रकाशित श्रीश्रीविष्णुप्रिया सहस्रनामस्तोत्र की एक पुरानी प्रति जो आज से प्रायः ३८ वर्ष पूर्व बङ्गला लिपि में फाइन आर्ट प्रेस कलकत्ता से छपी थी, मुझे कई मास पूर्व देखने को मिली। इसके पूर्व मैंने श्रीविष्णुप्रियाजी का कोई स्तोत्र नहीं देखा था। उन्हीं महानुभाव द्वारा रचित 'श्रीश्रीविष्णुप्रियामङ्गल' में एक विष्णुप्रियाष्टक भी मुझे पढ़नेको मिला, जिसकी रचना बहुत ही उत्कृष्ट एवं भावपूर्ण लगी। वह छपा भी प्रायः सर्वांशमें शुद्ध है। उसे पढ़नेसे मन पर ऐसी छाप पड़ी कि उसके रचयिता महान् गौरभक्त होनेके साथ-ही-साथ उच्च कोटिके संस्कृतज्ञ विद्वान् अवश्य रहे होंगे, अन्यथा उनके द्वारा संस्कृतकी वैसी प्रौढ़ रचना कदापि सम्भव न होती। इसके ठीक विपरीत उनका सहस्रनामस्तोत्र छन्द विषयक इतनी अधिक एवं अक्षम्य भूलोंसे भरा है जैसे उसके रचयिता छन्द-शास्त्रके नियमोंसे सर्वथा अनभिज्ञ रहे हों, तथापि उसकी नामावली बहुत सुन्दर एवं गौरप्रेमियोंके काम की लगी। मनमें आया कि वह सहस्रनाम स्तोत्र उक्त अष्टक तथा 'विष्णुप्रियामङ्गल' और 'गम्भीराय श्रीविष्णुप्रिया' नामक बङ्गला पुस्तकोंमें संनिविष्ट उन्हीं महानुभाव द्वारा रचित कुछ अन्य स्फुट सामग्रीके साथ अष्टकके हिन्दीभाषान्तर सहित देवनागरी लिपिमें छाप दिये जायं तो उससे उन लोगोंका विशेष उपकार होगा जो श्रीश्रीगौराङ्गके एवं श्रीविष्णुप्रियाकी भगवदवतारके रूपमें उपासना करना चाहते हैं किन्तु साथ ही बङ्गला लिपि न जाननेके कारण उसकी उपर्युक्त सामग्रीसे लाभ नहीं उठा सकते, किन्तु जिस रूपमें वह सहस्रनाम बङ्गला लिपिमें छपा था, उसे उसी रूपमें छापनेका मनमें उत्साह नहीं हो रहा था। अनुमान यही है कि ये सब भूलें लिपिकारकी असावधानीके

कारण अथवा मुद्रकोंके प्रमादसे रह गयीं होंगी । साथ ही उसे देवनागरी लिपिमें छापनेका लोभ भी संवरण नहीं कर पा रहा था। अन्तमें भगवत्प्रेरणासे यही निर्णय हुआ कि उक्त सहस्रनामको किसी योग्य व्यक्तिसे संशोधित कराके छाप दिया जाय। भगवान् श्यामसुन्दर एवं उनकी प्रियतमा श्रीराधाकिशोरीकी कृपासे अनायास ही वैसा सुयोग प्राप्त हो गया और इस कार्यमें एक ऐसे विशिष्ट अधिकारी महात्माका आशीर्वाद, अनुमोदन एवं सहयोग भी प्राप्त हो गया, जिससे हमारा यह संशोधन-कार्य सर्वथा अनधिकार चेष्टा होनेपर भी क्षम्य ही नहीं अपितु मेरी अपनी मान्यताके अनुसार श्रीराधाहृदयविहारी भगवान् नन्दनन्दनको स्वीकार भी हो गया, क्योंकि वैसे अहंकारशून्य एवं सर्वथा भगवदर्पितचित्त महात्माओंकी चेष्टा भगवत्प्रेरित ही होती है, अहंकारप्रेरित नहीं। मुझे विश्वास है कि सहस्रनामके दिवंगत रचयिताकी आत्माको भी इससे संतोष ही होगा।

हां, इस सम्बन्धमें यहभी निवेदन कर देना आवश्यक है कि संशोधन करते समय इस बातका अपनी जानमें ईमानदारीके साथ पूरा ध्यान रखा गया है कि यथासम्भव मूल पाठ सुरक्षित रहे और नामोंकी संख्या पूरी एक हजार होनेके साथसाथ भरसक कोई भी नाम ऐसा न आ जाय जिसकी उसी अर्थमें पुनरावृत्ति हुई हो।* नामावलीके नाम संस्कृत वर्णमालाके प्रथम पाँच स्वरवर्णों–अ, आ, इ, ई और उ से लेकर व्यञ्जनों में कवर्ग, चवर्ग, एवं टवर्गके अनुनासिक पञ्चम वर्णों (ङ, ञ और ण) को छोड़कर शेष चारों वर्णों (क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, और ट, ठ, ड, ढ) तथा तवर्ग एवं पवर्ग के पाँचों वर्णों (त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म) से एवं य, र, ल, व – इन चारों अन्तःस्थ वर्णों; श, स, ष, ह–इन चारों ऊष्म वर्णों तथा क्ष – इस संयुक्ताक्षरसे क्रमशः

---

* इस प्रकारके अनेकार्थवाची अथवा समानार्थक नामोंकी अर्थ सहित तालिका पुस्तकके अन्तमें परिशिष्ट रूपमें दे दी गई है।

प्रारम्भ किये गये हैं—जिससे नामावली विशेष मधुर हो गयी है। केवल ट और ढ से प्रारम्भ होनेवाले नाम संस्कृत के न देकर बङ्गला के दिये गये हैं—कारण स्पष्ट है। संस्कृत भाषाके कोशमें इन वर्णों से प्रारम्भ होने वाले शब्द इने-गिने ही हैं। 'थ' से प्रारम्भ होने वाले नामोंमें भी इसी कारण 'थ' के स्थान पर 'स्थ' का ही प्रयोग करके संतोष कर लिया गया है। बीच-बीचमें अन्य वर्णोंसे प्रारम्भ होने वाले भी अनेक नाम आगये हैं। बङ्गला भाषा में 'ब' और 'व' का उच्चारण एक ही प्रकारका होने से 'ब' से प्रारम्भ होने वाले नामों में ही वकारादि वर्णों को भी सम्मिलित कर लिया गया है, व से प्रारम्भ होने वाले नाम अपने क्रममें नहीं आये हैं। संस्कृत-वर्णमालामें ऊष्म वर्णोंका क्रम इस प्रकार है—श,ष, स, ह। इसस्तोत्रमें 'ष' से प्रारम्भ होने वाले नामोंको सकारादि नामोंके बाद रखा गया है। हमने भी इस क्रमको उसी रूपमें रहने दिया है। हकारादि नामोंके बाद कुछ नाम ऐसे भी आये हैं, जिनमें उक्त क्रम का सर्वथा उल्लंघन हो गया है। हमने इन सभी नामों को भरसक मूलरूपमें ही रखनेकी चेष्टा की है।

यदि हमारे इस नम्र प्रयाससे गौरप्रेमियोंका कुछ भी उपकार हुआ तो हम अपने श्रमको सफल समझेंगे। अन्तमें हम इस क्षुद्र प्रकाशनको श्रीराधाकृष्णके ही अन्यतम रूप भगवान् श्रीगौराङ्गदेव एवं उनकी प्रियतमा भगवती श्रीविष्णुप्रियाके पुनीत चरणोंमें श्रद्धापूर्वक समर्पित करते हैं और आशा करते हैं कि वे इसे अपनी कृपादृष्टिसे परिप्लावित-कर अपने भक्तजनों का इसके द्वारा अशेष कल्याण करेंगे और हम पामरजनोंको भी अपनी कृपाका भाजन बनायेंगे।

माघी बसन्त पंचमी, विक्रमाब्द २०१७, विनीत-
शनिवार २१ जनवरी, १९६१। रामनिवास ढंढारिया

॥ श्रीश्रीविष्णुप्रियाबल्लभाय नमः ॥

उत्सर्ग–पत्र

गोलोकगत महात्मा श्रील शिशिरकुमार घोष दास करकमले –

महात्मन् !

गौर-वक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके आपनि जे भावे भजना करितेन एवं श्रीविष्णुप्रियातत्व जे भावे आपनार निज जनके शिक्षा दितेन ताहार किछु किछु आभास आमि पाइयाछि आपनार एकान्त अन्तरङ्ग-भक्त त्रिशेर वसन्तदादार मुखे एवं ताहार सङ्ग लाभे। आपनार सम्बन्धे तिनि आमाके गुरुबुद्धिते प्रभूत सम्मान करेन बटे, किन्तु आमि ताँहाके प्रेममय दादा बलिया डाकियाइ सुख पाइ। आपनि श्रीमती विष्णुप्रिया देवीर चिन्हित दास एवं सविशेष कृपापात्र। 'श्रीविष्णुप्रिया पत्रिका' द्वारा आपनिइ ताँहाके प्रथम प्रकाश करियाछिलेन। जीवित काले आपनाके साक्षात् दर्शन करिबार सौभाग्य आमार अदृष्टे घटे नाइ, से दुःख आमार मरिलेओ जाइबे ना। आपनार इष्टदेवी श्रीमती विष्णुप्रिया ठाकुराणीर सहस्र नाम स्तोत्रमाला ग्रन्थित करियाछि, आमि जानि इहा आपनार बड़ आदरेर धन, परम वस्तु। एइ श्रीविष्णुप्रिया सहस्रनाम स्तव-माला आपनार पवित्र नामेर स्मृतिचिन्हस्वरूप उत्सर्गीकृत हइल।

आजमीर (राजपूताना)
माघी वसन्त पञ्चमी
गौराब्द ४३५

आपनार विरहकातर
श्रीहरिदास गोस्वामी

॥ श्रीश्रीविष्णुप्रियावल्लभाय नमः ॥

उत्सर्ग-पत्र

गोलोकगत महात्मा श्रील शिशिरकुमार घोष दासके करकमलोंमें—

महात्मन् !

गौर-वक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीका आप जिस भावसे भजन करते एवं श्रीविष्णुप्रिया-तत्वकी जिस प्रकारसे आप अपने निज जनोंको शिक्षा देते, उसका मुझे कुछ कुछ आभास प्राप्त हुआ है आपके अनन्य अन्तरंग भक्त त्रिशा निवासी वसन्त दादाके श्रीमुखसे और उनके संग-लाभसे। आपके सम्बन्धके नाते वे अवश्य ही मेरा गुरु बुद्धिसे बड़ा सम्मान करते हैं, किन्तु मैं उनको प्रेममय दादाके नामसे पुकार कर ही सुखी होता हूँ। आप श्रीमती विष्णुप्रियाके सुचिन्हित दास हैं और विशेष कृपापात्र हैं। 'श्रीविष्णुप्रिया पत्रिका' के द्वारा आपने ही उनको प्रथम प्रकट किया था। जीवन कालमें आपके साक्षात् दर्शन करनेका सौभाग्य मेरे भाग्यमें नहीं प्राप्त होसका, यह दुःख मेरे मरने पर भी नहीं मिटेगा। आपकी इष्टदेवी श्रीमती विष्णुप्रिया ठकुरानीकी यह सहस्र-नाम-स्तोत्रमाला मैंने ग्रन्थित की है। मैं जानता हूँ यह आपके लिए बड़े आदरका धन है, परम वस्तु है। यह श्रीविष्णुप्रिया-सहस्रनामस्तव-माला आपके पवित्र नामके स्मृतिचिन्ह रूपमें उत्सर्ग की जा रही है।

अजमेर (राजपूताना)
माघी वसंत पञ्चमी
गौराब्द ४३५

आपका विरहकातर,
श्रीहरिदास गोस्वामी

विषय-सूची

		पृष्ठ
१.	मङ्गलाचरण	१
२.	श्रीवैष्णवीशक्ति-नाम-संकीर्तन	२
३.	श्रीगौरविष्णुप्रियाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	६
४.	श्रीगौरविष्णुप्रियायुगलध्यानम्	९
	(क) श्रीगौरविष्णुप्रियाध्यानम्	
	(ख) श्रीविष्णुप्रियादेवीध्यानम्	
५.	गायत्री	१०
	(क) युगलमन्त्रः	
	(ख) प्रणामः	
	(ग) युगलप्रणामः	
६.	श्रीश्रीविष्णुप्रियासहस्रनामस्तोत्रम्	११
७.	श्रीश्रीविष्णुप्रियाष्टकम्	४१
८.	श्रीविष्णुप्रिया-कीर्तन	४६
९.	कामना	४७
१०.	आत्मनिवेदन	४८
११.	युगलशयनमन्त्रः	४९
१२.	परिशष्ट	५०

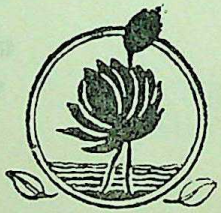

॥ श्रीश्रीविष्णुप्रियावल्लभाय नमः ॥

मङ्गलाचरणम्

गौराङ्गं नदियानन्दं लक्ष्मीविष्णुप्रियेश्वरम् ।
नटन्तं नागरवरं तं वन्दे कीर्तनप्रियम् ॥१॥
गौरहरिं शचीसुतं सर्वोत्तमं लीलामयम् ।
द्विजवरं जगन्नाथं तं वन्दे पुरुषोत्तमम् ॥२॥
भक्तवश्यं भावमयं गौरगोविन्दविग्रहम् ।
लोकेश्वरं लक्ष्मीकान्तं तं वन्दे सेवकप्रियम् ॥३॥
विश्वेश्वरं सदानन्दं लोकेशं लोकनायकम् ।
विश्वम्भरं प्रेममयं तं वन्दे ह्यघनाशनम् ॥४॥
ध्यानातीतं वेदगुह्यं सर्वलोकैकवन्दितम् ।
सर्वावतारसर्वस्वं तं वन्दे प्रेमदायकम् ॥५॥
नदियानागरश्रेष्ठं नवद्वीपपुरंदरम् ।
चित्स्वरूपं चिदानन्दं तं वन्दे परमेश्वरम् ॥६॥
वैष्णवानां प्राणप्रियं नामप्रेमप्रचारकम् ।
नरनारायणात्मानं तं वन्दे वरदायिनम् ॥७॥
माल्यचन्दनचर्चाङ्गं दिव्यतिलकशोभनम् ।
जगन्नाथसुतं गौरं तं वन्दे लोकपावनम् ॥८॥

श्रीवैष्णवीशक्ति - नाम - सङ्कीर्तन

जत नारायणी शक्ति जगत जननी ।
सेइ सब हइयाछे वैष्णव गृहिणी ॥
ताँ सबार प्रेमधारे अन्त नाइ पाइ ।
सबेइ वैष्णवी शक्ति भेद किछु नाइ ॥
(श्रीचैतन्यभागवत)

जय जय विष्णुप्रिया सनातनसुता ।
गौरवक्षविलासिनी सर्वगुणयुता ॥
जय जय लक्ष्मीप्रिया वल्लभदुहिता ।
गौरकान्ता शिरोमणि महापतिव्रता ॥
जय जय शचिमाता जगतजननी ।
जाँर गर्भे जन्म लैला गौरगुणमणि ॥
जय पद्मावती जय निताइ-जननी ।
साधुसेवापरायणा साध्वी शिरोमणि ॥
जय जय सीतादेवी अद्वैतगृहिणी ।
जय श्रीअद्वैत-शक्ति रमणीर मणि ॥
जय जय श्रीजाह्नवी नित्यानन्द-शक्ति ।
जाँहार स्मरणे होय नित्यानन्दे भक्ति ॥

जय जय श्रीवसुधा नारी शिरोमणि ।
जाँर प्राणवल्लभ निताइ गुणमणि ॥
जय श्रीमालिनी देवी श्रीवास-भामिनी ।
बाल्यभावे नित्यानन्दे पालिलेन जिनि ॥
चन्द्रशेखर पत्नी जय जय सर्व्वजया ।
सनातन-पत्नी जय जय महामाया ॥
वृन्दावनदास-माता जय नारायणी ।
प्रभु अवशेष पात्री बलि जाँरे मानि ॥
प्रभु धात्रीमाता जय जय नारायणी ।
जय रत्नावती जय गदाइ-जननी ॥
काञ्चना अमिता जय विष्णुप्रिया-सखि ।
कालीदास-पत्नी जय जय विधुमुखी ॥
गौराङ्गेर कृपापात्री जय दासी दुःखी ।
राखिलेन स्वयं प्रभु जाँर नाम सुखी ॥
जय दमयन्ती जय राघव-भगिनी ।
जाँहार झालिते प्रीत गौर गुणमणि ॥
जय साध्वी सती नारी मुरारि-गृहिणी ।
करिलेन अन्नदान श्रीगौराङ्गे जिनि ॥
शिवानन्द-पत्नी जय नारी शिरोमणि ।
अकपटे गौरसेवा करिलेन जिनि ॥

सुदर्शन-पत्नी जय जय भाग्यवती ।
गुरूमा बलेन जाँरे गौर बालमति ॥
गङ्गादास-पत्नी जय जय पण्डितानी ।
करिलेन गौरसेवा शिक्षाकाले जिनि ॥
नदियावासिनी जय हरिबोला नारी ।
जाँर मुखेर हरि नामे तुष्ट गौरहरि ॥
जय नवद्वीपवाला नदीयाकुमारी ।
जाँर संगे कैला लीला बाल्ये गौरहरि ॥
नदीयानागरी जय गौर विरहिणी
गौराङ्ग नागर जाँर हृदयेर मणि ॥
जय जय श्रीमाधवी महान्ति-भगिनी ।
व्रजरसपात्री बलि ख्याति जाँर शुनि ॥
जय सार्व्वभौम-पत्नी जय षाटि-माता ।
गौराङ्गसर्व्वस्व जाँर महापतिव्रता ॥
जय राणी चन्द्रकला गजपति-शक्ति ।
पाइलेन जाँर पुत्र श्रीगौराङ्गभक्ति ॥
जय नीलाचलवासी जतेक रमणी ।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु देखिलेन जिनि ॥
नदीयावासिनी जय जतेक नागरी ।
देखिलेन गौरलीला जाँरा प्राणभरि ॥

जय जय श्रीवैष्णवी भक्त-नारीवृन्द ।
कृपा करि सबे मिलि देह पदद्वन्द्व ॥
अनन्त वैष्णवीशक्ति अनन्त महिमा ।
अनन्त चरितगाथा वेदे नाहि सीमा ॥
वैष्णव-प्रकृति सबे हन मायातीता ।
अप्राकृत भावमयी साध्वी सुचरिता ॥
जय जय श्रीवैष्णवी शक्ति समुदय ।
स्मरणे जाँदेर नाम भवबन्ध क्षय ॥
श्रीवैष्णवी शक्तिरूपा वैष्णवगृहिणी ।
तोमादेर कृपा हले तबे गौर चिनि ॥
जय हउक तोमादेर चरणेर दासी ।
तुमि सबे पुण्यवती गौर अभिलाषी ॥
कृपा कर कृपामयि ! कलि-जीव प्रति ।
गौराङ्गभजन दिये घुचाओ दुर्गति ॥
जय लक्ष्मी-विष्णुप्रिया जय नवद्वीप ।
जय गौर सुन्दर नदीया-प्रदीप ॥
विष्णुप्रिया पादपद्म हृदे करि आश ।
नाम संकीर्त्तन करे दीन हरिदास ॥

श्रीगौरविष्णुप्रियाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

१ २ ३ ४
श्रीगौरो नदियानन्दो गौराङ्गः शचिनन्दनः ।
५ ६ ७
विष्णुप्रिया महासाध्वी सनातनकुमारिका ॥१॥
८ ९ १०
विष्णुप्रियाप्रियः श्रीशो संकीर्तनप्रचारकः ।
११ १२ १३ १४
गौराङ्गवल्लभा धीरा प्रेमदा प्रेमदायिका ॥२॥
१५ १६ १७ १८
नवद्वीपविधुर्देवो गौरचन्द्रो गौरहरिः ।
१९ २० २१ २२
नदियानागरी श्रेष्ठा गौरप्रिया सनातनी ॥३॥
२३ २४ २५ २६
विष्णुप्रियेश्वरो गौरो नारायणो नरोत्तमः ।
२७ २८ २९ ३०
विष्णुप्रिया गौरशक्तिर्भक्तिरूपा प्रभावती ॥४॥
३१ ३२ ३३ ३४ ३५
जगन्नाथसुतो धीमान् रुक्माङ्गः पुरुषो हरिः ।
३६ ३७ ३८ ३९
नवद्वीपेश्वरी रासा गौराङ्गी गौरवल्लभा ॥५॥

४० ४१ ४२
गुणसिन्धुर्गुणग्राही स्वनामगुणगायकः ।

४३ ४४ ४५ ४६
कल्याणी कमला ह्यार्या विष्णुभक्तिप्रदायिका ॥६॥

४७ ४८ ४९
निमाईपण्डितो वाग्मी सर्व्वशास्त्रविशारदः ।

५० ५१ ५२
नवद्वीपाधिदेवेशी सुशीला चारुशोभना ॥७॥

५३ ५४ ५५
विष्णुप्रियेशो लक्ष्मीशो जगदानन्ददायकः।

५६ ५७ ५८ ५९
देवदेवी महादेवी विष्णुप्रिया चन्द्रानना ॥८॥

६० ६१
नित्यानन्दप्राणसखा अद्वैतहृदयेश्वरः ।

६२ ६३ ६४
जगत्पूज्या जगद्धात्री जगदानन्ददायिनी ॥९॥

६५ ६६ ६७
भक्तप्राणो भक्तवशो भक्तानुग्रहकारकः ।

६८ ६९ ७० ७१
विद्युद्गौरी सुवर्णाङ्गी जीवमाता शुभंकरी ॥१०॥

७२ ७३ ७४
अन्तःकृष्णः बहिर्गौरो राधाभावप्रकाशकः ।

७५ ७६ ७७
भक्तिरूपा कृष्णभक्तिर्भक्तानुग्रहकारिणी ॥११॥

गौराङ्गः श्रीहरिर्धन्यो हरिनामप्रचारकः ।
देवेन्द्रवन्दिता नारी सर्वेश्वरी सर्वोत्तमा ॥१२॥
नरश्रेष्ठो नरवरो नटेन्द्रः कीर्तनप्रियः ।
विश्वेश्वरी विश्वसेव्या विष्णुप्रिया सुनागरी ॥१३॥
नागरेन्द्रो नटवरो गौरकैशोरको हरिः ।
प्रेमदात्री प्रेमभयी गौरसुन्दरगेहिनी ॥१४॥
नदियेशो लक्ष्मीकान्तो पूर्णानन्दस्वरूपकः ।
गरिष्ठा गतिदा गौरी गौरजाया सुरेश्वरी ॥१५॥

इत्युक्तं युगलस्तोत्रं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय प्रेमभक्तिमवाप्नुयात् ॥१६॥

श्रीगौरविष्णुप्रियायुगलध्यानम्

तप्तकाञ्चनवर्णाभं शुभ्रयज्ञोपवीतिनम् ।
ध्यायेद्विश्वम्भरं विष्णुप्रियालिङ्गितविग्रहम् ।।

श्रीगौरविष्णुप्रियाध्यानम्

स्वर्णवर्णं सदानन्दं दिव्योपवीतधारिणम् ।
चन्दनालिप्तसर्वाङ्गं शचीपुत्रं नरोत्तमम् ।।
द्विजश्रेष्ठं च वरदं दिव्यतिलकशोभितम् ।
विष्णुप्रियायुतं गौरं नागरीगणवेष्टितम् ।।
प्रेमानन्दमयं प्रेमदायिनं भक्तवत्सलम् ।
प्रसन्नवदनं देवं वरदं प्रेमरूपिणम् ।।

श्रीविष्णुप्रियादेवीध्यानम्

तप्तकाञ्चनगौराङ्गीं चन्द्रकान्तिसमप्रभाम् ।
सिन्दूरबिन्दुशोभाढ्यां नानालंकारभूषिताम् ।।
पट्टवस्त्रपरीधानां शङ्खकङ्कणधारिणीम् ।
सनातनसुतां देवीं गौरभक्तिप्रदायिनीम् ।।

गायत्री

ॐ विष्णुप्रियायै विद्महे भक्तिरूपायै धीमहि
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

युगलमन्त्रः

क्लीं विष्णुप्रियागौराङ्गाभ्यां स्वाहा ।

प्रणामः

तप्तकाञ्चनवर्णाभां वैष्णवीशक्तिरूपिणीम् ।
सनातनसुतां देवीं प्रणमामि प्रभुप्रियाम् ।।
गौराङ्गवल्लभां देवीं भक्ताभीष्ट प्रदायिनीम् ।
नवद्वीपेश्वरीं साध्वीं गौरवक्षोविलासिनीम् ।।

युगलप्रणामः

ॐ नमो विष्णुप्रियानाथ नमस्ते शचिनन्दन ।
नमो विष्णुप्रियादेव्यै गौरशक्त्यै नमो नमः ।।
गौराय गौरचन्द्राय नवद्वीप विहारिणे ।
नमो लक्ष्म्यै महादेव्यै महासाध्व्यै नमो नमः ।।

श्रीश्रीविष्णुप्रियासहस्रनामस्तोत्रम्

१ २ ३
अन्नदात्री चान्नपूर्णा अनन्तप्रेमसागरा ।
४ ५ ६
अनादिरादिप्रकृतिरनन्तगुणशालिनी ॥१॥

७ ८ ९
अमितादिसखीयुक्ता अचिन्त्याद्भुतरूपिणी ।
१० ११ १२
अदोषदर्शिनीदेवी अनन्ता ह्यखिलेश्वरी ॥२॥

१३ १४
आल्हादिनीसारभूता आश्रितप्रपातकितारिणी ।
१५ १६ १७
आपदुद्धारिणी ह्याद्या आचाण्डालप्रपावनी ॥३॥

१८ १९
आद्याशक्तिस्वरूपा वै आराध्या सर्वदेवता ।
२० २१
आब्रह्मादिदेवपूज्या सर्वाशक्तिविनाशिका ॥४॥

२२ २३ २४
इन्द्रपूज्या चेष्टदेवी इष्टमन्त्रस्वरूपिणी ।
२५ २६ २७
इच्छामयीच्छाशक्तिश्च इच्छारूपा सनातनी ॥५॥

ईशभक्तिप्रदादेवी ईशानेनप्रपूजिता ।
ईश्वरी चेश्वरप्रेष्ठा ईशशक्तिप्रदायिनी ॥६॥
उमेशवन्दिता पूज्या उत्तमैश्वर्यदायिनी ।
ॐकाररूपिणी ह्यार्य्या अष्टसिद्धिप्रदायिनी ॥७॥
करुणार्णवरूपा च करुणारसवर्षिणी ।
कमलाङ्घ्रिः कनकाङ्गी कामबीजस्वरूपिणी ॥८॥
कम्रकान्तिमयीदेवी कमला कमलानना ।
कंदर्पदमनीरामा कात्यायनी कृपाकरी ॥९॥
किलकिञ्चितभावाढ्या किशोरी कृष्णसेविका ।
कीर्तिदा कीर्तनप्रिया कलिकिल्बिषनाशिनी ॥१०॥
कुण्डलिनीशक्तिरूपा कुललक्ष्मीः कुलाङ्गना ।
कृष्णप्रेममयीबाला कृष्णशक्तिस्वरूपिणी ॥११॥

६१ ६२ ६३
कृष्णभक्ता कृष्णकान्ता कालभीतिनिवारिणी ।
६४ ६५
कामबीजात्मिकादेवी काञ्चनादिसखीप्रिया ॥१२॥
६६ ६७
काञ्चनादिकृपादात्री कामभीतिविनाशिका ।
६८ ६९ ७० ७१
कान्त्याढ्या कामिनी कन्या कृष्णप्रेमतरङ्गिणी ॥१३॥
७२ ७३ ७४
कृष्णसेवारतिः कृष्णा कृष्णसेवापरायणा ।
७५ ७६ ७७
कृष्णदासी कृष्णशक्तिः कृष्णानन्दप्रदायिनी ॥१४॥
७८ ७९
कृष्णभक्तिप्रियारम्या कृष्णभक्तिप्रदायिनी ।
८० ८१
कृष्णचैतन्यपरमा नवद्वीपविहारिणी ॥१५॥
८२ ८३
कृष्णशक्तिधरादेवी परानन्दप्रदायिनी ।
८४ ८५
कृष्णभावप्रदाधन्या कृष्णभक्तिपरायणा ॥१६॥
८६ ८७
कृष्णानुग्रहदात्री च कृष्णभक्तिस्वरूपिणी ।
८८ ८९
कृष्णचैतन्यमहिषी कारुण्यामृतवर्षिणी ॥१७॥

कृष्णानुरागिणीरामा[९०] राधाभावप्रकाशिका[९१]।
कृष्णपीयूषरसिका[९२] कृष्णानन्दप्रदायिनी[९३] ॥१८॥
कृष्णप्रेमभैक्ष्यदात्री[९४] श्रीकृष्णकरुणाकरा[९५]।
कृष्णप्रेमाम्भोधिमग्ना[९६] कृष्णप्रेमप्रवर्द्धिनी[९७] ॥१९॥
कृष्णभक्तसङ्गप्रिया[९८] कृष्णलीलाविभाविनी[९९]।
कृष्णस्याह्लादिनीदेवी[१००] कृष्णसौख्यविलासिनी[१] ॥२०॥
खगेन्द्रवन्दितादेवी[२] खञ्जनाक्षीमनोरमा[३]।
गौरचन्द्रप्राणप्रिया[४] गीर्वाणी[५] गतिदायिनी[६] ॥२१॥
गौरशक्तिगौरकामा[७][८] गौरभक्तिपरायणा[९]।
गौरप्रेममयीबाला[१०] गौराङ्गमतिमोहिनी[११] ॥२२॥
गौराङ्गगृहिणी[१२] गौरी[१३] गौराङ्गप्राणवल्लभा[१४]।
गौराङ्गप्रेयसीधन्या[१५] गौरप्रेमप्रदायिनी[१६] ॥२३॥

१७ गौरवक्षःस्थितादेवी १८ गौराङ्गानन्ददायिनी ।
१९ गौराङ्गवल्लभारामा २० गौरध्यानपरायणा ॥२४॥
२१ गौरप्राणेश्वरीलक्ष्मी २२ गौरप्रेमतरङ्गिणी ।
२३ गौरानुरागिणीदेवी २४ गौराङ्गगुणगायिका ॥२५॥
२५ गौराङ्गसेविनीनित्या २६ सदागौरकुतूहला ।
२७ गौराङ्गमहिषीपूर्णा २८ गौरप्रेमरसार्णवा ॥२६॥
२९ गौरप्रेमरसोन्मत्ता ३० गौराङ्गप्राणतोषिणी ।
३१ गौररसेसदामग्ना ३२ गौरसुन्दरमोहिनी ॥२७॥
३३ गौरानन्दसदानन्दा ३४ गौरवक्षोविलासिनी ।
३५ गौराङ्गविरहोन्मत्ता ३६ गौराङ्गप्रियवादिनी ॥२८॥
३७ गौरामृतरसेमग्ना ३८ गौरनामप्रचारिणी ।
३९ गौरसेव्या ४० गौरमयी ४१ गौराङ्गपदसेविनी ॥२९॥

४२ ४३ ४४
गौरचित्ता गौररामा गौराङ्गरसभाविता ।

४५ ४६ ४७
गौराङ्गी गौरकान्ता च गौरगोविन्दगेहिनी ॥३०॥

४८ ४९ ५०
गौरेश्वरी चिदानन्दा गौराङ्गपदभाविनी ।

५१ ५२ ५३
गौरमण्डल्यधिष्ठात्री गौरदा गुणसागरा ॥३१॥

५४ ५५ ५६ ५७
गौरप्राणाधिका गीता गान्धर्वा गर्वहारिणी ।

५८ ५९ ६०
गौरप्राणेश्वरी गोत्री गौरलीलासहायिका ॥३२॥

६१ ६२
गौराङ्गसर्वस्वपूज्या गौरचन्द्रप्रियेश्वरी ।

६३ ६४ ६५
गौराङ्गनागरप्रिया नवगौरी सुशोभना ॥३३॥

६६ ६७
गौराङ्गमधुमाधुर्य्या गौरकृष्णमनोरमा ।

६८ ६९ ७०
गौरचन्द्रप्राणप्रिया गरिष्ठा गुणसाधिका ॥३४॥

७१ ७२
गोगोपवत्सलादेवी गौराङ्गेरतिदायिका ।

७३ ७४
गौराङ्गचरणासक्ता गौराङ्गगणपूजिता ॥३५॥

गौड़ेश्वरी[७५] गौरसखी[७६] गुणधामा[७७] गरीयसी[७८] ।
गौरगतिर्गौरवश्या[७९] गौरसौख्याभिलाषिणी[८०] ।।३६ ।।
गौरचन्द्रप्रियतमा[८१] गौराङ्गहृदिवासिनी[८२] ।
गौरदेवप्राणप्रिया[८३] गौरगोपालभाविनी[८४] ।।३७।।
गर्विणी[८५] गायिका[८६] गुर्व्वी[८७] गौरचन्द्रविनोदिनी[८८] ।
गुणालया[८९] गुणकरी[९०] गङ्गादर्शनकाङ्क्षिणी[९१] ।।३८।।
गङ्गारूपा[९२] गङ्गाभक्ता[९३] गङ्गाभक्तितरङ्गिणी[९४] ।
गङ्गातटनिवासा[९५] च गङ्गासलिलसेविनी[९६] ।।३९।।
गुणातीता[९७] गुणमयी[९८] गृहलक्ष्मीः[९९] शुभंकरी[१०० १] ।
गोस्वामिगणवन्द्या[२] च गायत्री[३] गौरवान्विता[४] ।।४०।।
घनानन्दमयीदेवी[५] घनश्यामघटस्थिता[६] ।
घोरपापपरित्रात्री[७] चिद्घना[८] चिच्छ्वरूपिणी[९] ।।४१।।

चतुःषष्टिकलाविज्ञा[१०] चतुर्वेदविशारदा[११] ।
चारुगोरोचनागौरी[१२] चारुचन्द्रनिभानना[१३] ॥४२॥
चिन्मयी[१४] चिद्घनानन्दा[१५] चित्तचैतन्यकारिणी[१६] ।
चैतन्यरूपिणी[१७] चार्वी[१८] चैतन्यचिरसङ्गिनी[१९] ॥४३॥
चैतन्यजीवनादेवी[२०] चतुवर्गप्रदायिनी[२१] ।
चिन्तातीता[२२] चारुशीला[२३] चन्द्रकान्तिसमप्रभा[२४] ॥४४॥
चम्पकपुष्पवर्णाभा[२५] चतुरा[२६] चित्तहारिणी[२७] ।
चराचरेश्वरीदेवी[२८] चिन्ताज्वरनिवारिणी[२९] ॥४५॥
छन्दोबन्धा[३०] काव्यमयी[३१] स्वच्छन्दा[३२] गृहचारिणी[३३] ।
जगन्मयी[३४] जगद्धात्री[३५] जगदानन्दकारिणी[३६] ॥४६॥
जगन्नाथपुत्रवधूर्जाह्नवीवसुधाप्रिया[३७][३८] ।
जन्ममृत्युहरादेवी[३९] सम्पूज्या[४०] जगदीश्वरी[४१] ॥४७॥

४२ ४३ ४४ ४५
जयप्रसूर्जगल्लीला जयश्रीर्जयधायिनी ।

४६ ४७ ४८ ४९
जगदम्बा जगच्छक्तिर्जयदा जगतांप्रसूः ॥४८॥

५० ५१ ५२ ५३
जगद्रूपा जगज्जेत्री जगत्तारा जयंकरी ।

५४ ५५ ५६
जगच्चिन्त्या जगत्पूज्या जगदाधाररूपिणी ॥४९॥

५७ ५८
भ्रमन्नूपुरपादाब्जा प्रेमनिर्झररूपिणी ।

५९ ६० ६१
टल्मलागौरप्रेमाढ्या अचला धैर्य्यशालिनी ॥५०॥

६२ ६३ ६४
ठक्कुरार्या पाकपटुर्नामहट्टप्रकाशिनी ।

६५
डिण्डिमेन स्वभक्तेन जयगौरविघोषिणी ॥५१॥

६६ ६७
ढल्ढलाप्रेमभावाढ्या श्रीहट्टवसतिप्रिया ।

६८ ६९
तप्तकाञ्चनगौराङ्गी तमोगुणविनाशिनी ॥५२॥

७० ७१ ७२
तिलकधरा वैष्णवी त्रिलोकीमङ्गलप्रदा ।

७३ ७४ ७५
त्रैलोक्यतारिणीदेवी विधात्री त्रिदशेश्वरी ॥५३॥

तुलसीसेवनानन्दा (७६) तुलसीमाल्यधारिणी (७७) ।
तुलसीचयनप्रीता (७८) तुलसीवनचारिणी (७९) ॥५४॥

त्रिगुणाधाररूपा (८०) च त्रयी (८१) त्रात्री (८२) तपस्विनी (८३) ।
तीर्थेश्वरी (८४) तीर्थमयी (८५) तीर्थमूलपदद्वया (८६) ॥५५॥

तेजस्विनी (८७) त्रिकालज्ञा (८८) तापत्रयनिवारिणी (८९) ।
तारिणी (९०) तापविच्छेत्री (९१) त्रिवर्गफलदायिनी (९२) ॥५६॥

स्थितिः सृष्टिःपालयित्री (९३) स्थिरा (९४) धीरा (९५) मनोरमा (९६) ।
स्थिरसौदामनीरूपा (९७) गङ्गास्नानप्रिया (९८) शुभा (९९) ॥५७॥

दयामयी (१००) दयाधारा (१) दीनदुःखनिवारिणी (२) ।
दाक्षायणी (३) महादुर्गा (४) दिव्यालंकारभूषिता (५) ॥५८॥

दिव्यवेषा (६) दीनधात्री (७) दिव्यभूषणधारिणी (८) ।
दयाशीला (९) द्वारकेशी (१०) सर्वदुःखविनाशिनी (११) ॥५९॥

१३ १४ १५ १६
देवदेवी महादेवी वेणीबद्धा विनोदिनी ।
१७ १८
दैवशक्तिप्रदात्री च सर्वदेवप्रपूजिता ॥६०॥
१९ २०
देवतानांदुराराध्या दरिद्रप्रतिपालिका ।
२१ २२ २३
दोर्दण्डोद्दण्डरूपा च विद्यारूपा विदांवरा ॥६१॥
२४ २५ २६
धर्मसंस्थापिनीदेवी ध्यानमग्ना धुरंधरा ।
२७ २८ २९ ३०
ध्यानातीता धर्मधात्री धर्म्मदा धर्म्मरूपिणी ॥६२॥
३१ ३२ ३३
धरित्रीरूपिणी धात्री धनहीनेधनप्रदा ।
३४ ३५ ३६
धर्माधिकारिणी धन्या धनपुत्रप्रदायिनी ॥६३॥
३७ ३८
ध्रुवानन्दप्रदादेवी युगधर्मप्रचारिणी ।
३९ ४०
धूरिधूसरसर्वाङ्गी विरहेधरणीशया ॥६४॥
४१ ४२ ४३ ४४
धीरा साध्वी धीरधीरा धर्ममार्गप्ररक्षिणी ।
४५ ४६
ध्वजवज्राङ्कुशाब्जाङ्घ्रिरशक्यघटनापटुः ॥६५॥

४७ ४८
नवद्वीपेश्वरीदेवी नरशक्तिप्रकाशिनी ।

४९ ५० ५१
नवद्वीपमयी गौरी परमा नर्मदायिनी ॥६६॥

५२ ५३ ५४
नदियानागरीश्रेष्ठा नवीना नवयौवना ।

५५ ५६
नवद्वीपरसोन्मादा नागरीकुलमञ्जरी ॥६७॥

५७ ५८
नवद्वीपभावमयी नागरीणांशिरोमणिः ।

५९ ६० ६१
नारायणी नवबाला नवद्वीपरसाश्रिता ॥६८॥

६२ ६३ ६४ ६५
नदियानन्ददा पूज्या नित्यरूपा नताननां ।

६६ ६७
नवद्वीपनिवासा च सनातनकुमारिका ॥६९॥

६८ ६९ ७०
नवद्वीपेन्द्रपत्नी च निर्विकारा निरामया ।

७१ ७२ ७३
नववृन्दावनानन्दा नरेशी च निरञ्जनी ॥७०॥

७४ ७५ ७६
नवद्वीपाधिदेवी च निराकाङ्क्षा नितम्बिनी ।

७७ ७८
नरनारायणप्रीता नीलाम्भोरुहलोचना ॥७१॥

७९ ८०
नवगोरोचनागौरी नारायणपदेरता ।

८१ ८२ ८३
नार्य्युत्तमा नरप्रीता नामप्रेमप्रदायिनी ॥७२॥

८४ ८५ ८६
नानारत्नप्रदीप्ताङ्गी निर्म्मला मतिदायिनी ।

८७ ८८ ८९
नित्यानन्दमयी नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥७३॥

९० ९१
नीलवस्त्रपरीधाना निगूढरससाधिका ।

९२ ९३
नानाशास्त्रसुनिष्णाता निमाईचित्तमोहिनी ॥७४॥

९४ ९५
पतितोद्धारिणीदेवी परिपुष्टिप्रदायिनी ।

९६ ९७ ९८ ९९
पतितापावनी पुण्या प्रेमदात्री प्रभावती॥७५॥

४०० १
पतिभक्तिर्मूर्तिमती पतिसेवापरायणा ।

२ ३ ४
परिपूर्णा पराभक्तिः पद्मप्रतिमलोचना ॥७६॥

५ ६ ७
पद्मजा पद्महस्ता च पूर्णपातकनाशिनी ।

८ ९ १०
परमप्रीतिदात्री च परेशानी परात्परा ॥७७॥

११ १२ १३
प्रच्छन्नप्रभुनारी च प्रच्छन्ना प्रकृतिःपरा ।
१४ १५ १६
प्रेममयी प्रेमरूपा प्रेमभक्तिस्वरूपिणी ॥७८॥
१७ १८
पवित्राणां पवित्रा च पापसंहारकारिणी ।
१९ २०
प्राणेशपादुकासेवापरा पीडानिवारिणी ॥७९॥
२१ २२
प्रेमभक्तिप्रदादेवी परमानन्ददायिनी ।
२३ २४ २५ २६
प्रेमानन्दा परानन्दा पङ्कजाक्षी प्रियंवदा ॥८०॥
२७ २८ २९
पूर्णचन्द्रानना पूर्णा परमार्थप्रदायिनी ।
३० ३१ ३२
प्रेमाश्रुगलिताङ्गी च पद्मासना प्रियंकरी ॥८१॥
३३ ३४ ३५
प्रेयसी प्रणवाकारा पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी ।
३६ ३७ ३८
पराशक्तिः परामुक्तिः पूर्णेन्दुसदृशानना ॥८२॥
३९ ४० ४१ ४२
फलदात्री फलासक्ता फणिवेणी विलासिनी ।
४३ ४४
फुल्लेन्दीवरनेत्रा च फुल्लहारसुशोभिनी ॥८३॥

४५ ४६ ४७
वराभयकरादेवी वरदा बुद्धिदायिनी ।
४८ ४९ ५० ५१
वाणीसिद्धा वरानारी वाग्देवी व्रतचारिणी ॥८४॥

५२ ५३ ५४
विष्णुप्रिया विष्णुकान्ता विष्णुभक्तिस्वरूपिणी ।
५५ ५६ ५७ ५८
विश्वाश्रया विश्वप्राणा विश्वेशी विश्वरूपिणी ॥८५॥

५९ ६० ६१ ६२
ब्रह्मरूपा ब्रह्ममयी वेदमाता वराननना ।
६३ ६४ ६५
विश्वात्मिका विश्ववन्द्या विष्णुमन्त्रस्वरूपिणी ॥८६॥

६६ ६७ ६८
विश्वाराध्या विधात्री च विश्वरूपेश्वरप्रिया ।
६९ ७० ७१ ७२
ब्रह्माण्डजननीदेवी वेदाङ्गी वैष्णवी शुभा ॥८७॥

७३ ७४ ७५
वेदातीता वेदगम्या सर्वविघ्नविनाशिनी ।
७६ ७७ ७८
वेदगुह्या बोधगम्या बीजमन्त्रस्वरूपिणी ॥८८॥

७९ ८०
वैष्णवागारपाली च वैष्णवीमातृरूपिणी ।
८१ ८२ ८३
विश्वरूपभ्रातृभार्य्या विष्णुजाया परात्परा ॥८९॥

८४ ८५ ८६
बलदात्री बुद्धिदात्री विश्वम्भरसुवल्लभा ।

८७ ८८ ८९ ९०
विष्णुमाया विष्णुकान्तिर्बीजाङ्कुरी वरेश्वरी ॥९०॥

९१ ९२ ९३ ९४
विप्रपत्नी विश्वपूज्या ब्राह्मणी बोधरूपिणी ।

९५ ९६
ब्रह्मादिवन्दितादेवी वैष्णवद्रोहनाशिनी ॥९१॥

९७ ९८ ९९ ५००
वैकुण्ठवासिनी लक्ष्मीर्वरदात्री वरप्रसूः ।

१ २ ३ ४
विद्यावती विश्वकर्त्री विदुषी व्याधिनाशिनी ॥९२॥

५ ६
विष्णुसेवारतादेवी वैष्णवप्रतिपालिका ।

७ ८
वंशीवदनसम्पूज्या विश्वम्भरपदार्चिका ॥९३॥

९ १० ११
वाङ्मनस्संयता बाला वैष्णवप्रीतिदायिनी ।

१२ १३ १४
बालार्कप्रतिभापूर्णा वत्सला विघ्ननाशिनी ॥९४॥

१५ १६ १७
व्रजभावाश्रिता वृन्दा वृन्दावनरसात्मिका ।

१८ १९ २०
व्रजानन्दप्रदादेवी शुद्धाभक्तिर्व्रजेश्वरी ॥९५॥

२१ २२ २३ २४
भवाराध्या भाग्यवती भवानी भक्तिदायिनी ।
२५ २६ २७
भागीरथी भक्तिधात्री भवक्लेश निवारिणी ॥९६॥
२८ २९ ३०
भक्तिस्वरूपिणीदेवी भारती भक्तवत्सला ।
३१ ३२ ३३
भक्तिप्रसारिणी भक्ता नवधाभक्तिवर्तिका ॥९७॥
३४ ३५
भक्ताधिष्ठातृदेवी च भक्तानुग्रहकारिणी ।
३६ ३७ ३८
भक्तिजेया भक्तिगम्या प्रेमभक्तिमहार्णवा ॥९८॥
३९ ४० ४१
भक्तिव्रजेश्वरीदेवी भाविनी भवतारिणी ।
४२ ४३ ४४
भवार्णवत्राणकर्त्री भावुका भक्तभाविनी ॥९९॥
४५ ४६
भक्तानामीश्वरीदेवी भक्तगोष्ठीशिरोमणिः ।
४७ ४८
भक्तानांजीवनप्राणा भक्तमङ्गलदायिनी ॥१००॥
४९ ५० ५१
भक्ताधीना भक्तश्रेष्ठा भक्तजीवनसम्बला ।
५२ ५३
भक्तानांपरमाराध्या स्वभक्तप्रतिपालिका ॥१०१॥

५४ ५५ ५६ ५७
भक्तानन्दा भक्तिरूपा महाभागवती सती ।
५८ ५९
भक्तिमुक्तिप्रदादेवी भावभक्तिविनोदिनी ॥१०२॥
६० ६१ ६२
भक्तभक्तिप्रिया भद्रा भक्तानन्दप्रदायिनी ।
६३ ६४
भक्तिभावप्रदादेवी भवतापप्रणाशिनी ॥१०३॥
६५ ६६ ६७ ६८
भुवनेशी भूरिदात्री भूशक्तिर्भूस्वरूपिणी ।
६९ ७० ७१ ७२
भूपालिका भगवती भामिनी भूतपाविनी ॥१०४॥
७३ ७४ ७५
भूतात्मिका भावधारा भक्तगोष्ठीशुभंकरी ।
७६ ७७ ७८
भूमाता भुवनानन्दा भक्तदुर्गतिनाशिनी ॥१०५॥
७९ ८०
भूभारहारिणीदेवी भक्तशक्तिस्वरूपिणी ।
८१ ८२ ८३ ८४
भावमूर्तिर्भूतमयी भूमिदा भवपालिका ॥१०६॥
८५ ८६
भक्ताभीष्टकरीदेवी भक्तवाञ्छाशुभंकरी ।
८७ ८८ ८९
भूसेविका भ्रान्तिशून्या भूसुरापत्तिनाशिनी ॥१०७॥

महामायासुतादेवी (९०) मोहिनी (९१) मतिमोहिनी (९२)।
महालक्ष्मीर्महामान्या (९३) (९४) सर्वमङ्गलमङ्गला (९५) ॥१०८॥
महाशुद्धा (९६) महासिद्धा (९७) महामन्त्रप्रकाशिका (९८)।
महाभावा (९९) महाविद्या (६००) महतांमतिदायिनी (१) ॥१०९॥
महामाहेश्वरी (२) आन्या (३) महाशक्तिसमन्विता (४)।
महापूज्या (५) महाधन्या (६) महाशीला (७) महाजना (८) ॥११०॥
महापुण्या (९) मानदात्री (१०) मायामोहविनाशिनी (११)।
महासाध्वी (१२) महाधीरा (१३) मालिनीमतिमोहिनी (१४) ॥१११॥
मानमयी (१५) मानवती (१६) मानदा (१७) मणिमण्डिता (१८)।
मातृस्वरूपिणी (१९) माता (२०) मङ्गला (२१) मङ्गलास्पदा (२२) ॥११२॥
मिश्रकन्या (२३) महाशान्ता (२४) सुमित्रा (२५) मितभाषिणी (२६)।
मुरारिगुप्तसम्पूज्या (२७) मधुकण्ठी (२८) मधुस्वरा (२९) ॥११३॥

मुकुन्दादिजनाराध्या (३०) मञ्जुला (३१) मृगलोचना (३२) ।
मुनिपूज्या (३३) मूलाधारा (३४) मधुस्यन्दा (३५) मनोमयी (३६) ॥११४॥
मोक्षदा (३७) माधवी (३८) मुख्या (३९) मनोज्ञा (४०) मानधायिनी (४१) ।
महेन्द्रादिदेवमान्या (४२) मुकुन्देमतिदायिनी (४३) ॥११५॥
मन्त्रदात्री (४४) मन्त्रसिद्धा (४५) मूलमन्त्रस्वरूपिणी (४६) ।
माधुर्यशालिनीश्रेष्ठा (४७) मधुराङ्गी (४८) मनोहरा (४९) ॥११६॥
मान्धात्रादिराजपूज्या (५०) महारात्रिर्महाप्रभा (५१) (५२) ।
मोहमायापरा (५३) मुग्धा (५४) मणिकौस्तुभभूषणा (५५) ॥११७॥
मालाजपपरादेवी (५६) महिला (५७) महिमान्विता (५८) ।
मृणालकोमलभुजा (५९) मातृशक्तिस्वरूपिणी (६०) ॥११८॥
यशस्विनी (६१) योगसिद्धा (६२) योगेशी (६३) यज्ञसेविनी (६४) ।
यशोदाहृदयानन्दा (६५) योगिनी (६६) यौवनान्विता (६७) ॥११९॥

६८ ६९ ७० ७१
रामा रत्नमयी रम्या नानारत्नविभूषिता ।

७२ ७३
रत्नवेद्या अधिष्ठात्री रत्नालंकारशोभिनी ॥१२०॥

७४ ७५ ७६ ७७
रसिका रसमयीश्रेष्ठा रसज्ञा रतिदायिनी ।

७८ ७९ ८० ८१
रासेविलासिनी राधा रासेशी रसदायिनी ॥१२१॥

८२ ८३ ८४
रासोल्लासप्रिया रन्त्री रासलीलासहायिका ।

८५ ८६ ८७
राधाभावमयीरामा राधिका रसमञ्जरी ॥१२२॥

८८ ८९ ९०
रागात्मिका रागमयी रागमार्गप्रदर्शिका ।

९१ ९२ ९३ ९४
रागानुगा रासरूपा रागज्ञा रागरञ्जिता ॥१२३॥

९५ ९६ ९७ ९८
रागिणी रूपिणी रस्या रागिणीरागरूपिणी ।

९९ ७०० १
राजराजेश्वरी राज्ञी राजेन्द्रकुलपूजिता ॥१२४॥

२ ३ ४
राधारूपा रसावेशा रासलीलाविनोदिनी ।

५ ६ ७
रूपनाममयी रूप्या रौरवत्राणकारिणी ॥१२५॥

रामानन्दरायवन्द्या ८ रामाणांमतिमोहिनी ९ ।
रासमण्डलमध्यस्था १० रासोत्सवविहारिणी ११ ॥१२६॥
राकाचन्द्रप्रभा १२ राका १३ रमणी १४ रमणीप्रिया १५ ।
राज्यलक्ष्मी १६ राज्यदात्री १७ राजपूज्या १८ रसेश्वरी १९ ॥१२७॥
लक्ष्मीप्रियासपत्नी २० च ललनाकुलपालिनी २१ ।
लक्ष्मीस्वरूपिणीदेवी २२ ललिता २३ लोकपालिनी २४ ॥१२८॥
लावण्याम्भोधिरूपा २५ च लज्जाशीला २६ लसत्तनुः २७ ।
लास्या २८ विद्युल्लतागौरी २९ लज्जारूपा ३० कुलाङ्गना ३१ ॥१२९॥
लीलावती ३२ लास्यरक्ता ३३ लीलाप्रीता ३४ कलावती ३५ ।
लीलामधुदानकर्त्री ३६ लीलालुब्धा ३७ लतातनुः ३८ ॥१३०॥
लोकमाता ३९ लोकपूज्या ४० लीलागानपरायणा ४१ ।
लोकलाल्या ४२ लोककर्त्री ४३ लौकिकी ४४ लयकारिणी ४५ ॥१३१॥

लोकानुग्रहकर्त्री च लीलालावण्यशालिनी ।
लोकलया लोकमान्या कलिक्लेशनिवारिणी ॥१३२॥
लोकेश्वरी लोकवन्द्या त्रैलोक्यप्रतिपालिनी ।
लौकिकाचारकर्त्री च लोकालोका लवप्रिया ॥१३३॥
शब्दातीता शब्दरूपा शमादिगुणभूषिता ।
शक्तिसंचारिणीदेवी शंकरी च शुभंकरी ॥१३४॥
शालग्रामप्रियादेवी शचीसुतविलासिनी ।
शान्तिरूपा शान्तिदात्री शङ्खकङ्कणधारिणी ॥१३५॥
शान्तिसंस्थापिकादेवी शाक्तशक्तिस्वरूपिणी ।
श्यामसौभाग्यवलिता शुभदा शक्तिदायिनी ॥१३६॥
शिरःस्था शीर्षमध्यस्था श्रीरूपा श्याममोहिनी ।
शीतला शीतलानन्दा श्रीसीताचित्तमोहिनी ॥१३७॥

८० ८१ ८२ ८३
शोभामयी शोभमाना शिवदा शुभशालिनी ।
८४ ८५ ८६
शोकदुःखहरादेवी शोकमुक्ता शुभाश्रया ॥१३८॥
८७ ८८ ८९
श्रद्धादात्री शुद्धसुखा शुद्धभक्तिप्रदायिनी ।
९० ९१ ९२ ९३ ९४
श्रद्धा सुधा महाशुद्धा सात्विकी व्रतचारिणी ॥१३९॥
९५ ९६
श्रुतिस्मृतीनां मर्मज्ञा शरणागतपालिका ।
९७ ९८
शास्त्रश्रवणसम्प्रीता शास्त्रमर्मप्रचारिणी ॥१४०॥
९९ १०० १ २
श्रीद्युतिः श्रीमती साध्वी श्रीगौराङ्गोरसिस्थिता ।
३ ४
श्रीवैष्णवप्रियादेवी स्त्रीलोकानां शिरोमणिः ॥१४१॥
५ ६
सदानन्दमयीदेवी सर्वसिद्धिसमन्विता ।
७ ८ ९
सर्वार्थसाधिका सत्या सर्वदासत्प्रचारिणी ॥१४२॥
१० ११
संकीर्त्तनरसानन्दा सच्छास्त्रपरिपाठिका ।
१२ १३ १४
सखीमण्डलमध्यस्था सत्यरूपा सनातनी ॥१४३॥

१५ १६
सदागौररसेमग्ना सर्वदापतिभाविनी ।
१७ १८
सर्वलोकपूज्यतमा सदागौरकुतूहला ॥१४४॥
१९ २०
सदाहास्यमयीदेवी सर्वशक्तिसमन्विता ।
२१ २२
सरस्वतीपतेर्भार्या सर्वविद्याप्रदायिनी ॥१४५॥
२३ २४
संख्यानामजपेमग्ना संख्यानामजपेरता ।
२५ २६ २७
संसारकर्त्री संसिद्धा सर्वमङ्गलदायिनी ॥१४६॥
२८ २९
सर्वश्रेष्ठगुणमयी सर्वदाभावहारिका ।
३० ३१
संसारोदधितरणी सदासत्सङ्गसेविनी ॥१४७॥
३२ ३३ ३४
सर्वज्ञा सर्वकल्याणी सर्वभूतदयावती ।
३५ ३६ ३७
सर्वश्रेष्ठा सर्वपूज्या सर्वसम्पद्विधायिनी ॥१४८॥
३८ ३९
स्वर्गापवर्गदादेवी सर्वकामफलप्रदा ।
४० ४१ ४२ ४३ ४४
स्वयंसिद्धा स्वतन्त्रा च स्वाहा स्वेच्छामयी स्वधा॥१४९॥

८० ८१ ८२ ८३
शोभामयी शोभमाना शिवदा शुभशालिनी ।
८४ ८५ ८६
शोकदुःखहरादेवी शोकमुक्ता शुभाश्रया ॥१३८॥
८७ ८८ ८९
श्रद्धादात्री शुद्धसुखा शुद्धभक्तिप्रदायिनी ।
९० ९१ ९२ ९३ ९४
श्रद्धा सुधा महाशुद्धा सात्विकी व्रतचारिणी ॥१३९॥
९५ ९६
श्रुतिस्मृतीनां मर्मज्ञा शरणागतपालिका ।
९७ ९८
शास्त्रश्रवणसम्प्रीता शास्त्रमर्मप्रचारिणी ॥१४०॥
९९ १०० १ २
श्रीद्युतिः श्रीमती साध्वी श्रीगौराङ्गोरसिस्थिता ।
३ ४
श्रीवैष्णवप्रियादेवी स्त्रीलोकानां शिरोमणिः ॥१४१॥
५ ६
सदानन्दमयीदेवी सर्वसिद्धिसमन्विता ।
७ ८ ९
सर्वार्थसाधिका सत्या सर्वदासत्प्रचारिणी ॥१४२॥
१० ११
संकीर्त्तनरसानन्दा सच्छात्रपरिपाठिका ।
१२ १३ १४
सखीमण्डलमध्यस्था सत्यरूपा सनातनी ॥१४३॥

सदागौररसेमग्ना (१५) सर्वदापतिभाविनी (१६)।
सर्वलोकपूज्यतमा (१७) सदागौरकुतूहला (१८) ॥१४४॥
सदाहास्यमयीदेवी (१९) सर्वशक्तिसमन्विता (२०)।
सरस्वतीपतेर्भार्या (२१) सर्वविद्याप्रदायिनी (२२) ॥१४५॥
संख्यानामजपेमग्ना (२३) संख्यानामजपेरता (२४)।
संसारकर्त्री (२५) संसिद्धा (२६) सर्वमङ्गलदायिनी (२७) ॥१४६॥
सर्वश्रेष्ठगुणमयी (२८) सर्वदाभावहारिका (२९)।
संसारोदधितरणी (३०) सदासत्सङ्गसेविनी (३१) ॥१४७॥
सर्वज्ञा (३२) सर्वकल्याणी (३३) सर्वभूतदयावती (३४)।
सर्वश्रेष्ठा (३५) सर्वपूज्या (३६) सर्वसम्पद्विधायिनी (३७) ॥१४८॥
स्वर्गापवर्गदादेवी (३८) सर्वकामफलप्रदा (३९)।
स्वयंसिद्धा (४०) स्वतन्त्रा (४१) च स्वाहा (४२) स्वेच्छामयी (४३) स्वधा (४४) ॥१४९॥

४५ ४६ ४७ ४८ ४९
सान्द्रानन्दा सुवर्णा च सावित्री स्वपरा सती ।

५० ५१ ५२ ५३
सौभाग्यसहिता सालिः सालंकारा सुभाषिणी ॥१५०॥

५४ ५५
स्वामिभक्तेःशिक्षयित्री स्वामिसेवापरायणा ।

५६ ५७ ५८
स्वकामिनी सुलावण्या स्वनामगायकप्रिया ॥१५१॥

५९ ६० ६१ ६२
सुन्दरी सुमतेर्दात्री सुशीला सुगतिप्रदा ।

६३ ६४ ६५ ६६
सुरेश्वरी सुरैर्वन्द्या सुचारा सुरुचिप्रिया ॥१५२॥

६७ ६८ ६९
सुरासुरगणैःपूज्या सत्यसारा सतांगतिः ।

७० ७१ ७२ ७३
सुकुमारी सुन्दराङ्गी सुकेशी सुभगाशया ॥१५३॥

७४ ७५ ७६
सुधामयी सौख्यदात्री सुखशान्तिविधायिनी ।

७७ ७८
सुवर्णवर्णाभादेवी सुन्दरीकुलमञ्जरी ॥१५४॥

७९ ८०
सुचारुकबरीयुक्ता सर्वदा-नवयौवना ।

८१ ८२ ८३ ८४
सुनायिका सुशोभाढ्या सुभङ्गी सुन्दरप्रभा ॥१५५॥

८५ ८६
सर्वधर्ममयीदेवी सर्वापत्तिविनाशिनी ।
८७ ८८ ८९
सर्वान्तर्यामिनी साध्या सर्वदामधुभाषिणी ॥१५६॥
९० ९१
सर्वभक्तप्रमोदा च सर्ववैष्णवसेविता ।
९२ ९३
सर्वापत्तारिणीदेवी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥१५७॥
९४ ९५ ९६ ९७
सर्वेश्वरी सर्वश्रुता सर्वगा सर्वमङ्गला ।
९८ ९९ १००
सर्वाधारा सर्वपरा सर्वमाधुर्य्यशालिनी ॥१५८॥
१ २ ३
सर्वेन्द्रियेश्वरी सौम्या साधिकानांशिरोमणिः ।
४ ५
सर्वसत्वगुणोपेता सर्वसाधनतत्परा ॥१५९॥
६ ७ ८
सर्वस्वरूपा सर्वाढ्या सर्वयोगसमन्विता ।
९ १० ११ १२
सत्वरूपा सर्वगुणा सुदती सुष्ठुवेशिनी ॥१६०॥
१३ १४ १५
सौभाग्यदायिनीदेवी सीमन्तिनी सदाव्रता ।
१६ १७ १८
सौरभ्यपरिपूर्णाङ्गी सुमुखी सौरभप्रिया ॥१६१॥

१९ २० २१
षोड़शी षड्भुजप्रेष्ठा षड्रागमयरूपिणी ।

२२ २३ २४
षड्दर्शनपरिज्ञात्री षष्ठी षण्मुखवल्लभा ॥१६२॥

२५ २६ २७
हर्यङ्घ्रिपद्मशरणा हरिप्रेष्ठा हरिप्रिया ।

२८ २९
हरिपादाब्जमधुपा हरिसेवापरायणा ॥१६३॥

३० ३१ ३२
हरिण्याक्षी हरेर्दासी हरिनामप्रचारिणी ।

३३ ३४ ३५
हरिवक्षोविहारा च हंसिनी हरिसेविका ॥१६४॥

३६ ३७ ३८
हरिचित्तहरादेवी ह्लादिनी हितकारिणी ।

३९ ४० ४१
हितवाग् हितकामा च हिंसाद्वेषनिवारिणी ॥१६५॥

४२ ४३ ४४
हास्याननना हराराध्या हेमहारसुशोभिनी ।

४५
हा नाथ ! नाथ हा ! शब्दैर्विलपन्ती मुहुर्मुहुः ॥१६६॥

४६ ४७ ४८ ४९
हारहीरा हेमवस्त्रा हासिनी ह्लादरूपिणी ।

५० ५१ ५२ ५३
हार्दज्ञा हलिनी हृद्या हेमाङ्गहृदयेश्वरी ॥१६७॥

५४ ५५ ५६
होमयज्ञेश्वरीदेवी महामाया महोदया ।
५७ ५८
हारीतादिमुनीज्या च हाहाकारनिवारिणी ॥१६८॥
५९ ६० ६१
हेमाङ्गदा हेमसूत्रा हेमकुण्डलभूषणा ।
६२ ६३
हरितालाभवर्णा च हेमचन्द्रनिभानना ॥१६९॥
६४ ६५ ६६
हेमाब्जवदनीदेवी ह्रीमती ह्रीस्वरूपिणी ।
६७ ६८
ह्रींबीजमयरूपा च हृदयानन्ददायिनी ॥१७०॥
६९ ७० ७१
क्षमामूर्तिमतीदेवी क्षमाऽऽधारा क्षमाप्रिया ।
७२ ७३ ७४ ७५
क्षमातुल्या क्षमादात्री क्षमाधारा क्षमामतिः ॥१७१॥
७६ ७७ ७८
क्षेमदात्री क्षेममयी अक्षमेक्षान्तिवर्षिणी ।
७९ ८० ८१ ८२
क्षौमप्रिया क्षितिस्रष्ट्री क्षेत्रज्ञा क्षेत्ररूपिणी ॥१७२॥
८३ ८४ ८५
क्षेमंकरी क्षेमशक्तिः क्षेत्रक्षेत्रज्ञभाविनी ।
८६ ८७
क्षीरोदवासिनीदेवी क्षितौ भिक्षाप्रदायिनी ॥१७३॥

८८ ८९ ९०
क्षीणाङ्गी क्षीणमध्या च क्षितिदेवप्रपूजिता ।

९१ ९२
क्षौमवासःपरीधाना अक्षयस्वर्गदायिनी ॥१७४॥

९३ ९४
नवद्वीपाश्रितादेवी नित्यनूतनभक्तिदा ।

९५ ९६
विष्णुभक्तप्रियावामा सर्वापत्सुशुभंकरी ॥१७५॥

९७ ९८
नवद्वीपधरादेवी नवद्वीपप्रदीपिका ।

९९ १०००
नवद्वीपपरित्रात्री नवधाभक्तिदायिका ॥१७६॥

विष्णुप्रियाया नामानि पठेद्वा शृणुयादपि ।
गौरभक्तिर्भवेत्तस्य भवेद् गौरकृपा ध्रुवम् ॥१७७॥

सहस्रनामान्येतानि यः पठेद् भक्तिपूर्वकम् ।
अन्तकाले भवेत्तस्य श्रीगौराङ्गे मतिः स्मृतिः ॥१७८॥

इति श्रीश्रीविष्णुप्रियासहस्रनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

श्रीविष्णुप्रियावल्लभार्पणमस्तु ॥

श्रीश्रीविष्णुप्रियाष्टकम्

गौराकृतेर्भगवतो महिमार्णवस्य
श्रीप्रेमभक्तिरसदानविधौ विभाव्या ।
साचिव्यशक्तिघनमूर्तिरिवेह भक्ति-
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥१॥

चौदहो भुवनोंकी विजयलक्ष्मीरूपा भक्तिस्वरूपिणी भगवती विष्णुप्रियाकी सदा जय हो, जिनकी इस रूपमें भावना की जा सकती है कि महिमाके अगाध सागर भगवान् गौराङ्गदेवके प्रेम-भक्ति-रस-वितरणके कार्यमें उनका साथ देनेके लिये मानो उनकी सहकार शक्ति ही मूर्तरूप धारण करके प्रकट हुई हो ॥१॥

मायापुरेन्दु महिषी महिमोज्ज्वलश्री-
रभ्यर्च्यचारुचरणामरमुख्यवृन्दैः ।
या प्रेमभक्तिरसदा शुभदा नतानां
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥२॥

जिनके चारुचरण बड़े-बड़े देवताओंके समूहों द्वारा (भी) सब प्रकार अर्चन करनेयोग्य हैं, जो (अधिकारियोंको) प्रेमभक्तिके रसका पान कराती तथा नमन करनेवालोंको शुभफल प्रदान करती हैं, वे समस्त लोकोंकी विजयलक्ष्मीरूपा तथा अपनी (अलौकिक) महिमासे प्रकाशित शोभाको धारण करनेवाली, मायापुरको आह्लादित करनेवाले चन्द्रमारूप भगवान श्रीकृष्णचैतन्यदेवकी महारानी भगवती विष्णुप्रियाकी सदा सर्वोपरि जय हो ॥२॥

देवी शुभाशय सनातनमिश्रपुत्री
श्रीपादसेवनरतानतदुःखहन्त्री ।
कान्तावरा द्विज पुरंदरनन्दनस्य
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥३॥

सदाशय सनातनमिश्रकी आत्मजा तथा ब्राह्मणश्रेष्ठ (श्रीजगन्नाथ मिश्र) के आत्मज श्रीगौराङ्गदेवकी श्रेष्ठ पत्नी भगवती विष्णुप्रिया, जो चरण-सेवामें प्रेमपूर्वक लगे हुए भक्तजनोंके अशेषदुःखोंका नाश करनेवाली तथा सम्पूर्ण लोकोंकी विजयलक्ष्मीरूपा हैं, सदा जयशील हों ॥३॥

वैकुण्ठनाथदयितावितती विमृग्यैः
सौन्दर्यसौभगगुणैरनुवश्यकान्ता ।
वृन्दारकेन्द्रललनाकुलजुष्टकीर्ति-
र्विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥४॥

वैकुण्ठाधिपति भगवान् विष्णुकी प्रेयसीगण (भगवती लक्ष्मी, भूदेवी आदि) भी जिन्हें विशेष चावके साथ चाहती रहती हैं (परन्तु पाती नहीं), ऐसे सौन्दर्य एवं सौभाग्यादि अनुपम गुणोंसे जिन्होंने अपने प्रियतम प्रभु श्रीगौराङ्गदेवको वशमें कर रखा है तथा जिनकी कीर्तिका बड़े-बड़े देवताओं की ललनाएं भी गान करती रहती हैं, वे सम्पूर्ण जगतकी विजयलक्ष्मीरूपा भगवती विष्णुप्रियाकी सदा जय हो ॥४॥

कारुण्यसौरभसुवासितसर्वविश्वा
लावण्यवीचिपरिदिग्धदिगन्तरा या ।
श्रीमच्छचीहृदयनन्दननन्दयित्री
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥५॥

जिनकी करुणाकी सुगन्धसे विश्वब्रह्माण्डसौरभित है तथा लावण्यरूप समुद्रकी तरंगोंसे दिशाओंके अन्तराल परिव्याप्त हैं तथा जो परम सौभाग्यशालिनी शची माताके हृदयनन्दन भगवान् गौराङ्गदेवको भी (जो स्वयं आनन्दरूप हैं) आह्लादित करनेवाली हैं, समस्त भुवनोंकी विजय-लक्ष्मीरूपा वे भगवती विष्णुप्रिया सदा जयशील हों ॥५॥

या श्रीशचीसुतकटाक्षशरार्दितापि
लीलोच्छलन्मदनकार्मुकसंनिभभ्रूः ।
जेत्रीव वर्म्म विपुलं पुलकं वहन्ती
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥६॥

भगवान् शचीनन्दनके कटाक्षवाणोंसे पीड़ित होनेपरभी विलासपूर्वक उल्लसित हुए अपनी भ्रुकुटिरूप कंदर्पशरासनके प्रभावसे जो उन्हें (अनायास) स्मर-समरमें जीतलेती हैं और सघन पुलकावलीरूप कवचको धारणकिये रहती हैं, वे समस्त भुवनोंकी विजयलक्ष्मीरूपा भगवती विष्णुप्रिया सदा जयशील हों ॥६॥

यानङ्गतप्तनिजकान्तकरीन्द्रसङ्गा -
दारब्धतुङ्गरससंगररङ्गनेत्री ।
कंदर्पकोटिजयिगौरमनोऽभिरामा
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥७॥

अनंग वाणोंसे पीड़ित गजेन्द्रसदृश अपने प्रियतमके साथ प्रस्तुत प्रकृष्ट रसमय संग्रामकी रंगस्थलीका नेतृत्व करती हुई जो करोड़ों कामदेवोंको पराजित करनेवाले उन गौरचन्द्रके चित्तको भी बरबस मोहित कर लेती हैं, वे त्रिभुवनकी विजयलक्ष्मीरूपा श्रीश्रीविष्णुप्रिया सदा जयशील हों ॥७॥

प्रेमामृताब्धिकनकाङ्गहरे रसज्ञा
या सर्वकामवरदा हृदयाधिदेवी ।
केलीकलासुकुशला सुखदा सखीनां
विष्णुप्रिया विजयतां जगतां जयश्रीः ॥८॥

जो प्रेम-सुधा-सागर श्रीगौरहरिके रस (प्रेम) की पूर्ण मर्मज्ञ ही नहीं अपितु उनके हृदयकी अधिष्ठातृदेवी हैं, सम्पूर्ण अभीष्ट वरोंको देनेवाली, केलीकलाओंमें सुचतुर तथा सखीजनों को आनन्द दान करने वाली हैं, वे त्रिलोकीकी विजयलक्ष्मीरूपा भगवती विष्णुप्रियाकी सदा जय हो ॥८॥

केनचिद् गौरदासेन राधिकावनसेविना ।
नवद्वीपं समाश्रित्य लिखितं पद्यमष्टकम् ॥९॥

वृन्दावननिवासी किसी गौर-सेवकने नवद्वीपकी शरण लेकर उपर्युक्त आठ पद्योंकी रचना की ॥९॥

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रद्धया परया मुदा ।
विन्देद्विष्णुप्रियादेवीपददास्यमसंशयम् ॥१०॥

जो श्रद्धापूर्वक परम प्रसन्नतासे उपर्युक्त अष्टकका नित्य पाठ एवं श्रवण करेगा, वह विष्णुप्रियादेवीकी चरण-सेवा निसंदेह प्राप्त करेगा ॥१०॥

श्रीविष्णुप्रिया - कीर्तन

रमणीशिरोमणि सनातननन्दिनि
नवद्वीप - रसधामा ।
अलङ्कारभूषिता व्रजरसभाविता
पट्टवसन परिधाना ॥
गौर सोहागिनी सुमधुर भाषिणी
नवद्वीपमयी बाला ।
गौरवक्षस्थिता सखीगण वेष्टिता
गौराङ्गिनी चारुशीला ॥
कनककान्ति जिनि वर्ण विकाशिनी
कुलवती कुलललना ।
विष्णुप्रिया देवी परमावैष्णवी
तिलक सुशोभित भाला ॥
नदीया विनोदिया गौर-विष्णुप्रिया
नदीया युगल प्रेमधामा ॥
दुर्गति दुरजन पातकी अभाजन
हरिदासे कुरु करुणा ॥

।। कामना ।।

अपराधी बले दाओ पदे दले,
मार शिरे लाथि पड़े पड़े काँदि,
चरण तबुओ छाडिबे ना ।
(ए) चरणेर तले बसिया बिरले,
भिजाइब माटि नयनेर जले,
काहाके ओ किछु बलिब ना ॥
(सुधु) मने मने कब किसे योग्य हब,
चरणेर रेणु चरणे मिशाब,
(ए) पद हते दूरे थाकिब ना ।
दूर दूर करे ताड़ाइया दिले,
पद तल हते जाइब ना चले,
मारिले ओ आमि मरिब ना ॥
तोमार चरणे जीवने मरणे,
थाके जेन मति एइ आशा मने,
दूरे जेते मोरे बलिओ ना ।
जत किछु सुख मने भावि दुःख,
जगत संसार भावि आमि छार,
(तव) चरणेर छाया छाडिब ना ॥
(ए) चरणेर तल, बड़ सुशीतल,
सब ज्वाला जाय जाय हाय हाय,
(तुमि) पद रज दिते भुलिओ ना ।
हरिदासियार पराणेर साध,
पद पाखालन चरण सेवन,
बञ्चित ताते करिओ ना ॥

आत्मनिवेदन

अयि मङ्गलमयि ! प्रेमरूपिणि प्रेममयी-विष्णुप्रिये ।
दीना दासी आमि, प्रेमधन नाहि, पूजिब तोमाय़ेकि दिये ॥
पुष्पाञ्जलि, प्रार्थना-वाणी, प्रेम ना थाकिले किछु ना ।
प्रेममयी तुमि, प्रेमाकांक्षी आमि, अधमे करगो करुणा ॥
जगभरि खुंजि, पाबे नाक तुमि, मो सम पातकी दुइटी ।
जगतेर माँझे, धरमेर साजे, पतित अधम कपटी ॥
कृपाय तोमार, पाव प्रेमधन, पाव प्रेममय गौराङ्ग ।
बान्धिया बुक, आशार आशाय, ताइ लइयाछि सङ्ग ॥
छाड़िब ना तव चरण कमल, ना करिले कृपा अधमे ।
चरणेर रेणु, करे राख मोरे, ठेल ना अधमे चरणे ॥
मनेर भरमे, जानि नाइ तोमा, वृथाय जीवन काटानु ।
मरमे मरिया, काँदितेछि ताइ, पराणेर कथा कहिनु ॥
धरम करम, साधन भजन, किछु नाहि जाने नारकी ।
शिशुर सम्बल, केवल रोदन, तुमि शिखायेछ ताइ कि ?
साधनेर पथ, देखायेछ तुमि, शिशुर सम्बल धरिब ।
धरिये चरण, धुलाते लुटाये, शिशुर मतन काँदिब ॥
दयामयि तुमि, अभागिनी आमि, कत दिन मोरे काँदाबे ।
कँदे कँदे 'हरि! प्राणे गेल मरि, मरि गेले आर कि दिबे ॥

जीवन थाकिते, जा किछु दिवार, दाओ तारे कृपा करिया।
शेषेर सम्बल, गौर-प्रेम धन, दाओ तारे प्राण भरिया॥
(तव) मन्दिर-द्वारे, कँदे कँदे मरे, चरण तलेते पड़िया।
आँखि-नीरे भासि, चरणेर दासी, भनये 'हरिदासिया'॥

विष्णुप्रिया पादपद्म करिया स्मरण।
दासी 'हरिदासी' करे आत्मनिवेदन॥

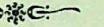

युगलशयनमन्त्रः

वन्दे तं गौरचन्द्रेशं वामे प्रियासमन्वितम्।
नमो विष्णुप्रियेशाय निद्रां भज महाप्रभो॥

※ परिशिष्ट ※

अष्टोत्तरशतनाम एवं सहस्रनामके अन्तर्गत कुछ अनेकार्थवाची अथवा समानार्थक नामोंकी अर्थसहित तालिका

अष्टोत्तरशतनाम

नाम	श्लोक संख्या	नाम संख्या	अर्थ
विष्णुप्रिया	१	५	गौराङ्गपत्नी भगवती विष्णुप्रिया
विष्णुप्रिया	४	२७	भगवान् विष्णुकी प्रियतमा भगवती लक्ष्मी
विष्णुप्रिया	८	५८	विष्णुरूप भगवान् श्रीचैतन्यदेवकी अर्द्धाङ्गिनी
विष्णुप्रिया	१३	९२	विष्णुरूप भगवान् श्रीचैतन्यको प्रियतम रूपमें जाननेवाली
हरिः	५	३५	स्मृतिसेही भक्तोंके समस्त पापोंको हरनेवाले
हरिः	१४	९७	भगवान् विष्णुके ही अन्यतम रूप
श्रीहरिः	१२	७९	ऐश्वर्यसम्पन्न अथवा लक्ष्मीरूपा अपनी अर्द्धाङ्गिनीसे युक्त भगवान् विष्णुरूप

सहस्रनाम

गौरी	२३	११३	गौर वर्णसे युक्त
नवगौरी	३३	१६४	नवीन गौर वर्णवाली
गरिष्ठा	३४	१६९	अतिशय गौरवयुक्ता
गरीयसी	३६	१७८	(औरोंकी अपेक्षा) अधिक गौरवान्वित
वैष्णवी	५३	२७१	विष्णुभक्ता, वैष्णवधर्ममें दीक्षित
वैष्णवी	८७	४७१	भगवान् विष्णुकी पालिका-शक्ति
वैष्णवीमातृ-रूपिणी	८९	४८०	गौरभक्तोंकी माता (पालन करनेवाली) वैष्णवीके रूपमें स्थित

नाम	श्लोक संख्या	नाम संख्या	अर्थ
शुभा	५७	३००	पवित्र शुभलक्षणोंसे (सौभाग्यसे) युक्त
शुभा	८७	४७२	सुन्दर रूपवाली
नवयौवना	६७	३५४	(अपने पतिके साथ संयोग-कालमें) नवयौवनमें स्थित
सर्वदा-नवयौवना	१५५	८८०	अपने दिव्य (राधा) रूपमें नित्यकिशोर वयमें स्थित
मतिदायिनी	७३	३८६	अन्तर्यामीरूपमें सबके हृदयमें स्थित रहकर सबको (श्रेष्ठ) बुद्धि देनेवाली
महतां मतिदायिनी	१०९	६०१	महान् पुरुषों (ज्ञानियों) को भक्तिरूपा (श्रेष्ठ) मति देनेवाली
विष्णुप्रिया	८५	४५२	विष्णुप्रिया नामसे विख्यात महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवकी अर्द्धाङ्गिनी
विष्णुकान्ता	८५	४५३	भगवती महालक्ष्मीके रूपमें भगवान् विष्णुकी प्रिया पत्नी
सती	१०२	५५७	भगवान् शंकरकी अर्द्धाङ्गिनी भगवती सतीके रूपमें स्थित
सती	१५०	८४९	पतिव्रता - शिरोमणि
सम्पूज्या	४७	२४०	परम पूज्या, भलीभांति पूजा करनेके योग्य
पूज्या	६९	३६३	पूजनीया, पूजा करने योग्य
महापूज्या	११०	६०५	महती पूजाके योग्य
सर्वपूज्या	१४८	८३६	सबके द्वारा पूजा पाने योग्य
धीरा	५७	२९६	ज्ञानवती, धीसम्पन्न
धीरा	६५	३४१	धैर्यवती
धीरधीरा	६५	३४३	धीरोंमें भी परम धैर्यशालिनी

॥ जय गौर ॥

आर्यावर्त प्रकाशन, १०, चौरंगी रोड, कलकत्ता-१३ की ओर से रामनिवास ढंढारिया द्वारा प्रकाशित एवं राधा प्रेस, ६८५ ए०, श्यामकुञ्ज, गांधीनगर, दिल्ली-३१ में कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित।